उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० अनिल कुमार शुक्ल
प्राचार्य
माँ अष्टभुजा कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन मऊगंज जिला- रीवा
Email id- dranilshukla9@gmail.com

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में जन्म लेता है और धीरे–धीरे समाज में बड़ा होकर सामाजिक नियमों को ग्रहण करके वह समाज का सदस्य बन जाता है। समाज में वह प्रेम, मिठास, ईर्ष्या, द्वेष, सुख–दुख का अनुभव करता है। समाज में उसे इन समस्याओं से इतर भी अन्य अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा इसके अतिरिक्त मनुष्य सामाजिक अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं से गुजरते हुए अपने भावी भविष्य के तरफ तत्परता से आगे बढ़ता जाता है। इस संसार में जो व्यक्ति अपने आप को सुख–दुःख में सामान्य रूप से स्थापित कर लेता है वही सच्चा व सफल व्यक्ति माना जाता है।

वर्तमान युग संघर्ष का युग है। जिधर भी हम दृष्टिपात करते हैं उधर समस्या ही समस्या नजर आती है। साथ ही बढ़ती धार्मिक सामाजिक जटिलताओं और साम्प्रदायिकता ने मानव जीवन को दुष्कर बना दिया है।

भारत एक धर्मनरिपेक्ष देश है यह कहना उतनी ही पुनरुक्ति होगी जितना यह कहना कि सूर्य नारायण पूर्व दिशा से उदित होते हैं परन्तु भारत की यह धर्म निरपक्षेता किसी तारीख विशेष से या किसी अवधि के पूर्व या पश्चात् से नहीं शुरू होती है इसकी जड़े भारत के सांस्कृतिक इतिहास से या यूँ कहें तो भारत की माटी से जुड़ी हुई है।

यह भारत की विविधता में एकता को साधने के प्रयास के साथ अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है। चाहे भरत की संहिताएँ रही हो चाहे विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में एक सिन्धुघाटी की सभ्यता रही हो, ये सभी अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि का हस्ताक्षर विश्व मानचित्र पर कर चुकी हैं तभी तो जब **सी.एल. वेपर**

अपनी पुस्तक की शुरूआत करते हैं तो यह स्वीकार करते है कि यूनान ने भले ही कितनी भी सुसंग राजनीतिक दर्शन दिया हो, भारत का राजनैतिक दर्शन पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष तथा सहिष्णु था। भारत का जीवन दर्शन अपने अंतःवासियों से अपेक्षा करता है कि वे जब कभी भी धर्म को संकट में देखे तो उसकी रक्षा हेतु अपने को अवतारी समझ आगे आये क्योंकि अधर्म वर्ग असुरक्षित हुआ तो समाज का वर्ग असुरक्षित होगा और अगर साधु वर्ग असुरक्षित हुआ तो समाज का पतन सुनिश्चित है। गीताकार का यह आह्वान किसी धर्म विशेष के लिए नहीं अपितु न्याय, सदाचार अपने कर्त्तव्य के धर्म की स्थापना का है।

स्मिथ के शब्दों में, ''धर्म निरपेक्ष राज्य की धारणा भारतीय लोकतंत्र के भविष्य के लिए बड़ा ही महत्त्व रखती है। यह धारणा आधुनिक उदारवादी लोकतंत्र के आधारभूत और अविच्छेद तत्त्व के रूप में स्थिर रह सकती है अथवा गिर सकती हैं।

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, ''धर्म निरपेक्षता का अर्थ गैर–आध्यात्मिक, धर्म अथवा आध्यात्मिक मामलों से कोई सम्बन्ध न होना, कोई वस्तु जो धर्म से भिन्न हो, उसके विरूद्ध अथवा उससे सम्बन्धित न हो अथवा धार्मिक वस्तुओं से सम्बन्धित न हो और आध्यात्मिक तथा धार्मिक वस्तुओं के विपरीत सांसारिक हो।''

हमारे देश में बहुत से धर्म मानने वाले लोग रहते हैं, लेकिन इन सभी धर्मों को मानने वाले लोगों के मन में यदि एक दूसरे के प्रति आदर भाव नहीं होगा। तो हम आज के इस संघर्ष पूर्ण युग में आगे नहीं बढ़ सकते हैं, परन्तु आज हम देखते हैं कि सभी धर्म विशेष कर हिन्दू–मुस्लिम आपस में नकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं एवं एक दूसरे से अपनी नकारात्मक अभिवृत्ति को दंगों के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

एक बालक परिवार में जन्म लेता है और अपने परिवार के वातावरण का उस पर सम्पूर्ण प्रभाव पड़ता है। बालक परिवार से संस्कार ग्रहण करता है। यदि घर में सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रखा जाता है तो बालक में सभी धर्मों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर के ही हम देश की एकता और अखण्डता को बनाये रख सकते हैं तथा बालकों का मार्ग दर्शन करके उनके दृष्टिकोण में उचित बदलाव किया जा सकता है।

धर्म निरपेक्षता राज्य को, समाज को महत्व प्रदान करता है समाज स्वयं में एक व्यापक संदर्भ है जो कि धार्मिक गतिविधियों को सम्मिलित करता है अतः धर्म निरपेक्षता धार्मिक कर्मकाण्डों का विरोधी है लेकिन धार्मिक मूल्यों एवं दर्शन का विरोधी नहीं है अतः धर्म निरपेक्षता, सामाजिक चेतना का पूरक है।

आज भारतीय विद्यालयों में प्रायः शिक्षण सामग्री तथा सूचनाओं की कमी होने के कारण विद्यार्थी परीक्षा उत्तीर्ण करना अपना कर्तव्य समझता है और उसका एक ही लक्ष्य रह गया है कि जीविकोपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त करें इसी कारण आज का युवा अधूरी शिक्षा को लेकर रोजगार के लिए इधर–उधर भटक रहा है। साथ ही उसकी आवश्यकता की पूर्ति न होने के कारण विद्यार्थी पथभ्रमित होकर अवांछनीय कार्यों की ओर प्रेरित होता है यह बात कभी भी नजर अंदाज नहीं की जा सकती है। वर्तमान में युवा वर्ग ही देश का कर्णधार है अतः कक्षा में नियमित देश–विदेश में होने वाली घटनाओं की जानकारी दे तथा जानने की कोशिश करें कि समस्या विशेष के प्रति विद्यार्थियों का क्या दृष्टिकोण है। वर्तमान समस्या में धर्म के आधार पर मानव समाज में अलगाववाद की भावना फैल चुकी है। मन्दिर मस्जिद के विवाद ने समाज में कटुता का बीज बो दिया है। जिसे दूर करना अति आवश्यक है अतः इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने यह समस्या चुनी की उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र तथा छात्राओं में साम्प्रदायिकता की भावना का स्तर क्या है एवं इसे किस प्रकार से कम किया जा सकता है। इसके साथ ही उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं में धर्म निरपेक्षता के सम्बन्ध में उसकी अभिवृत्ति क्या है?

समस्या कथन–

''उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्र एवं छात्राओं की धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन''।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं–

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है–

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति में अन्तर होता है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के रूप में जौनपुर जनपद में स्थित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् स्नातक स्तर (कला एवं विज्ञान वर्ग) में अध्ययनरत् तृतीय वर्ष के 200 छात्र–छात्राओं को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा चुनाव किया गया है। धर्मनिरपेक्षता के मापन हेतु डॉ0 आर0के0 ओझा द्वारा निर्मित धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

सारणी सं0 1

कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t– अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग के विद्यार्थी	100	152.34	37.16	1.40	0.288	1.97 df=198
2.	विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी	100	153.74	31.31			

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.34 एवं मानक विचलन 37.16 है तथा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 153.74 एवं मानक विचलन 31. 31 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.288 है। मुक्तांश 198 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.97 है अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

सारणी सं0 2

कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t– अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग के छात्र	50	152.56	35.57	0.86	0.130	1.98 df=98
2.	विज्ञान वर्ग के छात्र	50	153.42	30.27			

सारणी संख्या 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला वर्ग के छात्रों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.56 एवं मानक विचलन 35.57 है तथा विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 153.42 एवं मानक विचलन 30.27 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.130 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण पर

टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्म निपेरक्षता के प्रति अभिवृत्ति का विश्लेषण एवं निर्वचन

सारणी सं0 3

कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–अनुपात

क्र0 सं0	न्यादर्श	संख्या (N)	मध्यमान (M)	S.D.	दोनों मध्यमानों का अन्तर (M_1-M_2)	t–अनुपात	सार्थकता स्तर (0.05) पर सारणीमान
1.	कला वर्ग की छात्राएँ	50	152.56	38.68	1.38	0.193	1.98 df=98
2.	विज्ञान वर्ग की छात्राएँ	50	154.06	32.32			

सारणी संख्या 3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला वर्ग की छात्राओं का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.56 एवं मानक विचलन 38.68 है तथा विज्ञान वर्ग की छात्राओं की धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान 152.06 एवं मानक विचलन 32.32 है। परिगणित टी–अनुपात का मान 0.193 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर के लिए द्विपुच्छीय परीक्षण

पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.98 है। अर्थात् परिगणित टी–अनुपात सारणीमान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

अतः परिणामतः कहा जा सकता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

1. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्रों का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् कला एवं विज्ञान वर्ग की छात्राओं का धर्म निरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति समान होती है।

निहितार्थ

छात्रों की धर्मनिरपेक्षता के प्रति अभिवृत्ति इसलिए तटस्थ रहती है, क्योंकि छात्र छात्राओं की अपेक्षा समाज के बड़े भाग से मुखरित होते हैं और वे छात्राओं की अपेक्षा अन्य धर्मों के लोगों से अधिक सम्पर्क में होते हैं जबकि छात्रायें एक सीमित दायरे में रहती है। जिसके कारण छात्र एवं छात्राओं के सोच में अन्तर होता है। यही कारण है कि उनके धर्म निरपेक्षता में भी अन्तर होता है जबकि सामाजिक चेतना दोनों समूहों में बराबर होने का कारण आज हमारे समाज में समानता तथा सौहार्द्ध होने के कारण दोनों समूहों को समान अवसर प्राप्त हो रहे हैं जिस कारण दोनों समूह समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कुमारी, रीमा (2010). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की धर्मनिरपेक्षता तथा समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण, वी0ब0 सिंह पू0वि0वि0 जौनपुर, अप्रकाशित शोध सं0 1323, पृ0सं0 126

- गोरा, एम0एस0 (1996). उद्धरत विपिन चन्द्र, (2005). आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता एवं समाज का एक अध्ययन द्वितीय संस्करण , नेशनल बुक डिपों नई दिल्ली, पृ0 सं0 113–114
- चन्द्र, विपिन (2005). *आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता तथा समाजवाद का एक अध्ययन,* द्वितीय संस्करण, नेशनल बुक डिपों, नई दिल्ली पृ0 सं0 77
- सिंह, कुलश्रेष्ठ (1986). *इफैक्टिवनेस ऑफ वैल्यू क्लासीफाइंग स्ट्रेटजी इन वैल्यू ओरिएण्टेशन ऑफ, बी0एड0 स्टूडेन्ट्स,* अप्रकाशित शोध योजना, एन.सी.ई.आर.टी. (1986)।
- शर्मा, पी0सी0 (2006). *आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन विधियाँ,* इलाहाबाद : आलोक प्रकाशन।
- शर्मा, ए0 एवं अग्रवाल, बी0एल0 (2002). *सोसियोमेट्री : ए हैण्डबुक फॉर टीचर्स एण्ड काउंसेलर्स,* एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।